रेडियो वार्ता–आकाशवाणी, लखनऊ

शीर्षक– "हिन्दी में विज्ञान पत्रकारिता"

वार्ताकार– **डॉ0 दीपक कुमार श्रीवास्तव**
एसोसिएट प्रोफेसर, गणित विभाग
बी0एस0एन0वी0 पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ
dksflow@hotmail.com

रिकॉर्डिंग तिथि– 03–08–2015, प्रसारण तिथि– 11–08–2015, समय– सायं 5:00 से 5:30

हिन्दी में विज्ञान पत्रकारिता की देश में वर्तमान स्थिति

भारत एक विशाल देश है जहाँ हिन्दी बोलने एवं समझने वाले लोग देश के लगभग प्रत्येक भाग में मौजूद हैं। इसी कारण से देश–विदेश में नित–प्रतिदिन हो रहे नवीन वैज्ञानिक आविष्कारों की जानकारी तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रही प्रगति को देश के जनमानस तक पहुँचाने में हिन्दी अत्यन्त ही मददगार सिद्ध हो सकती है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि अधिकतर नवीन वैज्ञानिक शोध को अमेरिका तथा यूरोपियन देशों की तरफ से अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित किया जाता रहा है जिसका सरलतम हिन्दी अनुवाद उपलब्ध न होने के कारण भारत में लोगों को उस शोध व भविष्य में उससे प्राप्त होने वाले लाभ का पता आसानी से नहीं चल पाता है। इसी कारण से भारत में, खासकर हिन्दी भाषी राज्यों में, हिन्दी भाषा में विज्ञान पत्रकारिता या वैज्ञानिक लेखन का अपना महत्वपूर्ण स्थान है परन्तु हिन्दी में वैज्ञानिक शब्दों की कठिनता तथा उनके अर्थ को समझने में आने वाली व्यवहारिक कठिनाइयों के चलते विज्ञान पत्रकारिता उतनी लोकप्रिय नहीं हो पायी जितना उसको होना चाहिए था। हमारे बीच में एक प्रकार का भ्रम फैला हुआ है कि विज्ञान पत्रकारिता केवल सामान्य विज्ञान लेखन मात्र है। जबकि हिन्दी में विज्ञान पत्रकारिता के अंतर्गत शोध पत्र, तकनीकी व समीक्षा आलेख, लोकप्रिय विज्ञान आलेख, शोध सारांश, संगोष्ठी आख्या, नवीन वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी सूचनाएं, पुस्तक समीक्षा, प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के साक्षात्कार आदि सम्मिलित हैं। पिछले कुछ वर्षों से हिन्दी दैनिक समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, प्रसार भारती के कार्यक्रमों व डिजिटल मीडिया द्वारा विज्ञान की प्रगति से सम्बन्धित सूचनाएं एवं विशेषांक इत्यादि प्रकाशित व प्रसारित किये जा रहे हैं जिनका एक संक्षिप्त लेखा–जोखा प्रस्तुत है।

विज्ञान लेखन में अभिरूचि रखने वाले छात्र/छात्राओं, शिक्षकों एवं वैज्ञानिकों के लिए उपलब्ध स्रोत

देश–विदेश में हिन्दी में विज्ञान के प्रचार एवं प्रसार का लक्ष्य लेकर शिक्षाविदों एवं वैज्ञानिकों द्वारा 10 मार्च 1913 को गठित **विज्ञान परिषद, प्रयाग**(http://www.vigyanparishadprayag.org), द्वारा **"विज्ञान"** नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया जिसके अनवरत प्रकाशन को 100 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं।

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद(सी.एस.आई.आर.), नई दिल्ली के **राष्ट्रीय विज्ञान संचार तथा सूचना स्रोत संस्थान(निस्केयर)**(http://www.niscair.res.in/) द्वारा हिन्दी में विज्ञान लेखन एवं पत्रकारिता को स्थान देने वाली देश भर में सर्वाधिक प्रसिद्ध पत्रिका **"विज्ञान प्रगति"** का प्रकाशन वर्ष 1952 से अनवरत किया जा रहा है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा सन् 1961 में गठित **वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग**(http://www.cstt.nic.in/) द्वारा त्रैमासिक पत्रिका **"विज्ञान गरिमा सिंधु"** का हिन्दी में अनवरत प्रकाशन किया जा रहा है।

नैशनल रिसर्च डेवेलपमेंट कॉरपोरेशन(एन.आर.डी.सी.) (http://www.nrdcindia.com) द्वारा हिन्दी में प्रकाशित होने वाली विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की लोकप्रिय मासिक पत्रिका **"आविष्कार"** है जिसका प्रकाशन वर्ष 1971 से अनवरत जारी है।

"विज्ञान प्रसार(वी.पी.)"(http://www.vigyanprasar.gov.in) विज्ञान की सूचनाओं पर आधारित हिन्दी व अंग्रेजी में अपना एक मासिक न्यूज लेटर **"ड्रीम 2047"** प्रकाशित करता है। विज्ञान प्रसार विज्ञान की नवीन गतिविधियों से सम्बन्धित दृश्य धारावाहिकों को दूरदर्शन के राष्ट्रीय चैनल पर प्रसारित करवाता है जो कि बहुत ही ज्ञानवर्धक होते हैं। उदाहरणार्थ– **"गणित की सीढ़ियां"** नामक 13 कड़ियों वाला नया दृश्य धारावाहिक 30 मई, 2015 से प्रत्येक शनिवार को दूरदर्शन के राष्ट्रीय चैनल पर प्रातः 9:30 से 10:00 बजे तक प्रसारित हो रहा है।

इसी क्रम में मैं आकाशवाणी के माध्यम से सभी सुधी श्रोतागणों को बताना चाहता हूँ कि हिन्दी के माध्यम से देश–विदेश में विज्ञान के प्रचार–प्रसार का लक्ष्य लेकर उ0प्र0 राज्य की राजधानी लखनऊ के प्रतिष्ठित **बी0एस0एन0वी0 पी0जी0 कॉलेज(के0के0वी0)**, में **बी.एस.एन.वी. विज्ञान परिषद** का गठन वर्ष 2013 में किया गया। विज्ञान परिषद की एक प्रमुख शैक्षणिक गतिविधि के तहत **"अनुसंधान(विज्ञान शोध पत्रिका)"** का वार्षिक प्रकाशन राष्ट्रीय स्तर पर आरम्भ किया गया। पूरे देश में यह पत्रिका अपने तरह की हिन्दी में विज्ञान लेखन को प्रकाशित करने वाली अद्वितीय पत्रिका है। जिसमें विज्ञान लेखन से सम्बन्धित सामान्य से लेकर शोध स्तर तक के लेखों हेतु स्थान उपलब्ध है। इस पत्रिका को चार भागों में विभक्त किया गया है– भाग–1–शोध पत्रों हेतु, भाग–2–तकनीकी/समीक्षा लेखों हेतु, भाग–3– प्रचलित वैज्ञानिक लेखों हेतु, भाग–4–विविध(प्रचलित विज्ञान आलेख, शोध सारांश, संगोष्ठी आख्या, नवीन वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी जानकारी, पुस्तक समीक्षा, प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के साक्षात्कार, साइन्टून्स आदि सम्मिलित हैं।)। अन्य सम्बन्धित जानकारियां महाविद्यालय की वेबसाइट **www.bsnvpgcollege.in/vp** से प्राप्त की जा सकती हैं।

सुझाव एवं निष्कर्ष

भारत में हिन्दी में अपना वैज्ञानिक शोध प्रकाशित करने के जिज्ञासु शोध छात्र/छात्राओं, युवा शिक्षकों एवं वैज्ञानिकों को शैक्षणिक संस्थाओं एवं सरकार द्वारा ज्यादा से ज्यादा शोध पत्रिकाएं उपलब्ध करायी जानी चाहिए जिससे शोध स्तर पर हिन्दी लेखन को बढावा मिल सके। इस विधा से जुड़े लेखक के लिए हिन्दी व विज्ञान दोनों का ज्ञान होना अति आवश्यक है। वर्तमान में कुल मिलाकर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि विभिन्न विज्ञान परिषदों, व्यक्तिगत प्रयासों व कुछ हद तक केन्द्र सरकार व कहीं–कहीं राज्य सरकारों के प्रयास से देश में विज्ञान पत्रकारिता/लेखन का हिन्दी में सुधार हुआ है परन्तु अभी भी स्नातक व स्नातकोत्तर स्तरों के पाठ्यक्रमों के अंग्रेजी माध्यम से पढाये जाने तथा हिन्दी में विज्ञान की पुस्तकों के उपलब्ध न होने के कारण उच्च शिक्षा के क्षेत्र से हिन्दी का स्थान एवं योगदान लगभग नगण्य हो गया है और शोध स्तर पर इसकी कमी साफ झलकती है। इस कमी को ध्यान में रखते हुए मध्य प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 2011 में अटल बिहारी वाजपेई हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना भोपाल में की गई है। इस विश्वविद्यालय के अधिनियम के अनुसार आधारभूत विज्ञान, तकनीकी व चिकित्सा के स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोध स्तर के सभी पाठ्यक्रम हिन्दी में बनाये एवं पढ़ाये जायेंगे। देश के किसी राज्य द्वारा इस प्रकार का लिया जाने वाला यह एक साहसिक कदम है तथा अन्य राज्यों द्वारा भी इसी प्रकार के निर्णयों के द्वारा ही भविष्य में हम हिन्दी को उसका सही स्थान दिला पायेंगे। यू0पी0 टैक्निकल यूनीवर्सिटी, लखनऊ, के कुलपति जी द्वारा तकनीकी पाठ्यक्रम की पुस्तकों के हिन्दी अनुवाद भी उपलब्ध कराये जाने की बात कही गई है जो कि एक बड़ी बात है। दुनिया भर में कई विकसित देशों जैसे रूस, स्पेन, कोरिया आदि में उनकी अपनी भाषाओं में ही प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक की पढाई होती है तथा पाठ्यक्रम सम्बन्धी पुस्तकें भी उन्हीं भाषाओं में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। यहाँ पर कहने का तात्पर्य सिर्फ इतना है कि जो छात्र/छात्रायें हिन्दी माध्यम से अपनी उच्च शिक्षा को पूरा करना चाहते हैं, उनको इसका लाभ उपलब्ध कराया जाय। शब्दावली आयोग को भी अंग्रेजी के नये तकनीकी शब्दों के हिन्दी में उनके समकक्ष कठिन शब्दों के स्थान पर हिन्दी में जैसे का तैसा ग्रहण कर लेना ही वक्त की समझदारी होगा। जिस प्रकार अतर्राष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजी के लोकप्रिय तकनीकी शब्द जैसे– पेट्रोल, रेडियो, डिग्री सेल्सियस आदि को उनके अर्थ को समझते हुए हिन्दी लेखन में प्रयोग किया जाता है उसी प्रकार से अंग्रेजी के अन्य नये तकनीकी शब्दों को भी प्रयोग किये जाने की आवश्यकता भविष्य में होगी। विज्ञान पत्रकारिता जब तक सामान्य से शोध स्तर पर नहीं पहुँचेगी तब तक वह सम्पूर्णता से दूर ही रहेगी और भारतीय समाज को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में होने वाली प्रगति का पूरा लाभ प्राप्त नहीं हो पायेगा।

प्राप्त तिथि– 12.08.2015, स्वीकृत तिथि– 20.08.2015